बैर्लिट्टा का रहस्यमय देव

कथा वाचक का नोट

इटली के दक्षिण में, एड्रियाटिक सागर के तट पर, बैर्लिट्टा नाम का एक नगर है. यह एक शांत जगह है, बहुत कम पर्यटक यहाँ आते हैं. लेकिन बैर्लिट्टा में एक खास बात है, वह है सैन सैपॉलक्रो चर्च के ठीक सामने खड़ा एक बुत. यह विशालकाय बुत एक युवक का है. कुछ लोग कहते हैं कि सारे यूरोप में यह सबसे बड़ा बुत है. कोई नहीं जानता कि इसे वहाँ क्यों स्थापित किया गया था या फिर वह किस का बुत है. लेकिन एक बात निश्चित है कि बैर्लिट्टा के निवासी अपने रहस्यमय देव को बहुत चाहते हैं. वह इसके विषय में कई कहानियाँ सुनाते हैं. इन लोगों की एक लोकप्रिय कहानी है कि किस तरह इस विशालकाय बुत ने ग्यारहवीं शताब्दी में बैर्लिट्टा के लोगों को शत्रुओं से बचाया था.

यह वही कहानी है.

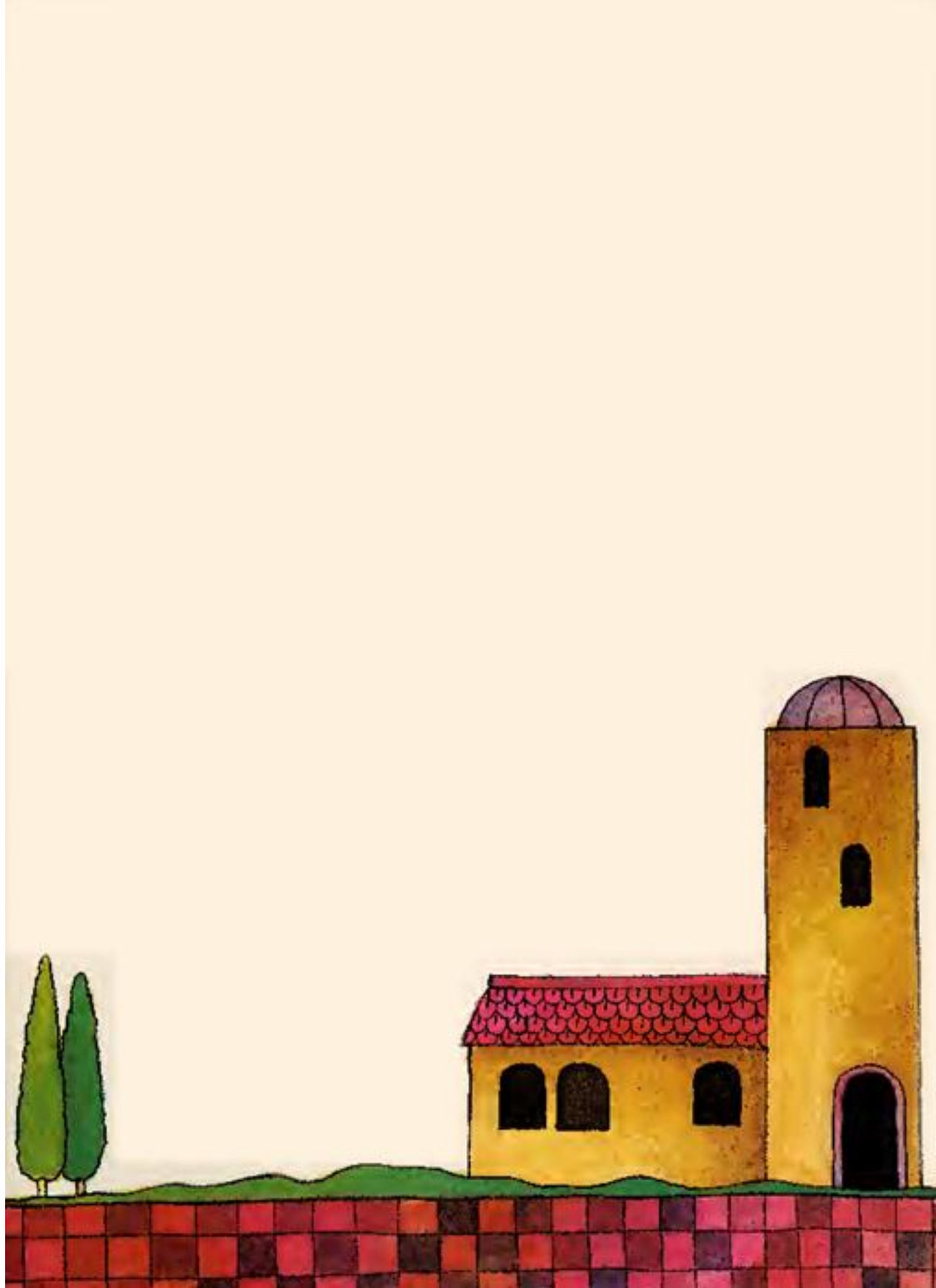

बैर्लिट्टा का रहस्यमय देव

बैर्लिट्टा नगर में
सैन सैपॉलक्रो चर्च के ठीक सामने
एक विशालकाय बुत स्थापित था.
कोई नहीं जानता था कि यह बुत कहाँ से या
कब आया था.
रहस्यमय देव-
लोग इसे इसी नाम से पुकारते था-
जब से लोगों को याद था
तब से वहाँ खड़ा था.

यहाँ तक कि ज़िया कॉन्चेट्टा को भी नहीं पता था.
ज़िया कॉन्चेट्टा सारे बैर्लिट्टा में सबसे वृद्ध थी.
विशालकाय बुत के सामने
चौराहे के दूसरी ओर वह रहती थी.
“हर दिन और हर रात मैंने सारा जीवन
जब भी खिड़की के बाहर देखा
तो उसे वहीं पाया जहाँ वह है,”
वह कहा करती थी.

अच्छा मौसम होता या खराब
रहस्यमय देव वहाँ खड़ा रहता.
बैर्लिट्टा के निवासियों को
अपने नगर में इस बुत का होना
बहुत पसंद था.

सारा दिन बच्चे
उसकी टांगों के आसपास खेलते
और उसके सिर के चारों
ओर कबूतर उड़ते.
छोटे लड़के उसके बड़े पाँव पर
बैठ कर एक-दूसरे को
चुटकुले सुनाते.

बहुत सवेरे सूर्य के उदय होने से
पहले, कॉन्वेंट की सिस्टर्स और
नगर के अन्य लोग
प्रार्थना करने के लिए चर्च आते.
वह सदा मुस्करा कर
या सिर हिला कर
देव का अभिनंदन करते.

फिर थोड़े समय बाद बड़े लड़के
देव के पाँव पर बैठ कर
आती-जाती लड़कियों
को देखते.

बाज़ार की ओर जाते हुए
लोग देव का अभिवादन करते
और उससे सौभाग्य की कामना करते
ताकि उनका सारा सामान
बिक जाए
और उन्हें
लाभ का सौदा मिले.

और रात के समय
लड़के-लड़कियाँ चोरी-छिपे
देव की छाया में प्यार करते.

फिर रास्ते खाली हो जाते.
देव के सिर और कंधों और बाँहों पर
कबूतर बैठ जाते और
गुटर्गूं करते-करते सो जाते,
और ज़िया कॉन्चेट्टा अपने घर की
खिड़की खोलती और पुकारती,
“शुभ रात्रि, देव.”

यह समय देव को सब से अधिक प्रिय था.
सब कुछ शांत था, सब कुछ निश्चल था.
अह, जीवन कितना शांतिमय है,
रहस्यमय देव ने सोचा.

लेकिन एक दिन इस शांतिपूर्ण जीवन में अवरोध आ गया.
नगर में सूचना आई कि एड्रियाटिक सागर के तट पर बसे नगरों का विनाश करती हुई,
हज़ार सैनिकों की एक विशाल सेना
उत्तर की ओर बढ़ती आ रही थी.
और यह सेना सीधी बैर्लिट्टा की तरफ
आ रही थी. नगरवासी घबराहट में
सड़कों पर दौड़ने लगे. जो सेना उनका
विनाश करने आ रही थी
उसका सामना करने के लिए
बैर्लिट्टा में कोई तैयार न था.
उनके पास कोई सेनापति नहीं थे,
कोई कप्तान नहीं थे.
अरे, उनके पास तो कोई सैनिक ही नहीं थे!

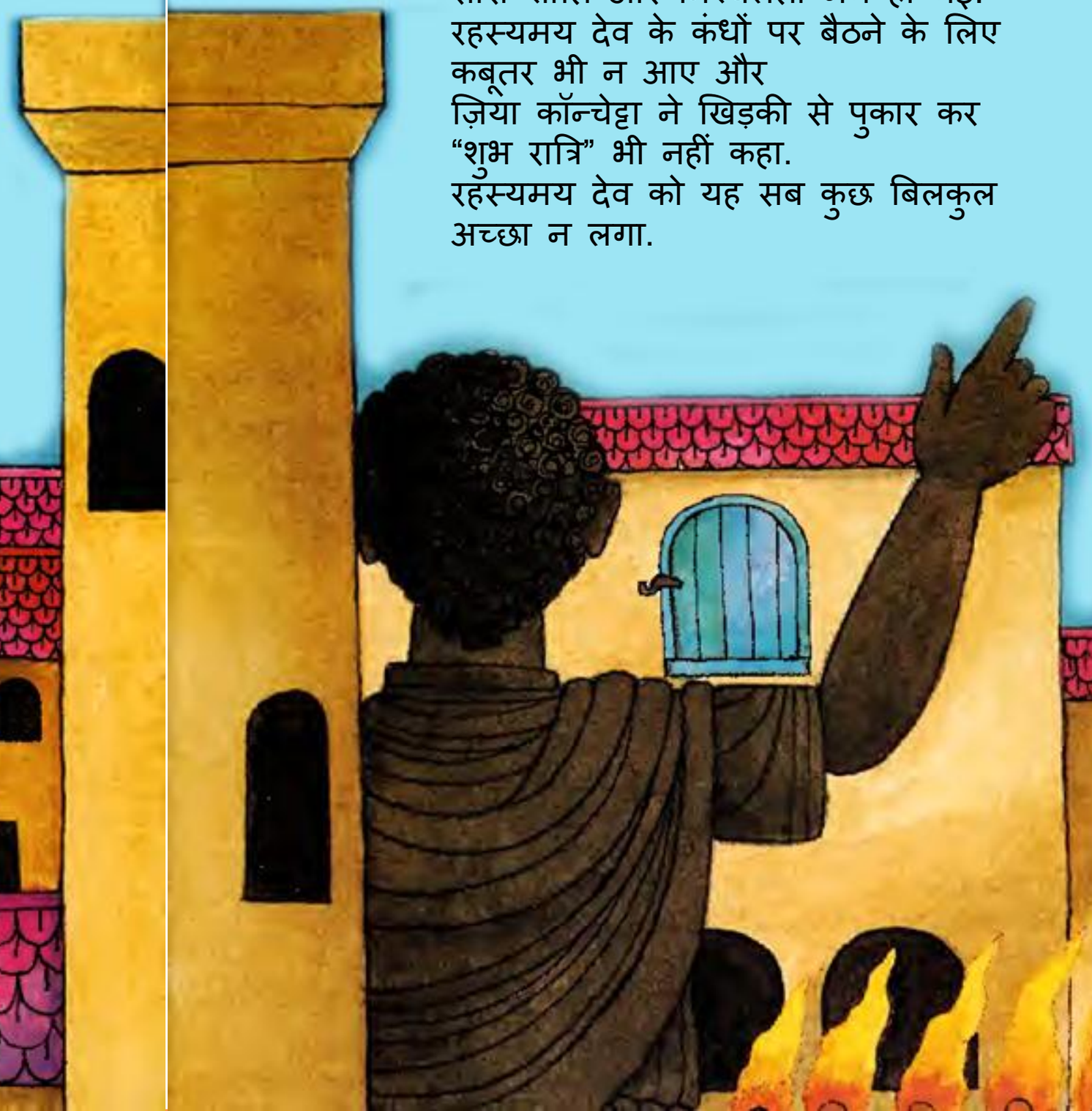

इमारतों से टकरा कर लोगों की चीखें और पुकारें गूंजने लगीं.
मशालों की रोशनी में रात जगमगाने लगी.
सारी शांति और निश्चलता भंग हो गई.
रहस्यमय देव के कंधों पर बैठने के लिए
कबूतर भी न आए और
ज़िया कॉन्चेट्टा ने खिड़की से पुकार कर
“शुभ रात्रि” भी नहीं कहा.
रहस्यमय देव को यह सब कुछ बिलकुल
अच्छा न लगा.

अगली सुबह भी स्थिती वैसी ही रही.
ऐसा लग रहा था कि जैसे सब लोग
प्रार्थना करने के लिए चर्च आ गए थे.
लेकिन बाज़ार न लगा.
किसी ने भी रहस्यमय देव का
अभिवादन नहीं किया
और न कोई उसे देख कर मुस्कराया.
बच्चे खेलने नहीं आए.
हर कोई यहाँ-वहाँ भाग रहा था और
गाड़ियों और ठेलों में अपना सामान
इकट्ठा कर रहा था.
हर कोई बैर्लिट्टा से भाग जाने की
तैयारी कर रहा था. हर कोई,
सिवाय ज़िया कॉन्चेट्टा
और रहस्यमय देव के.

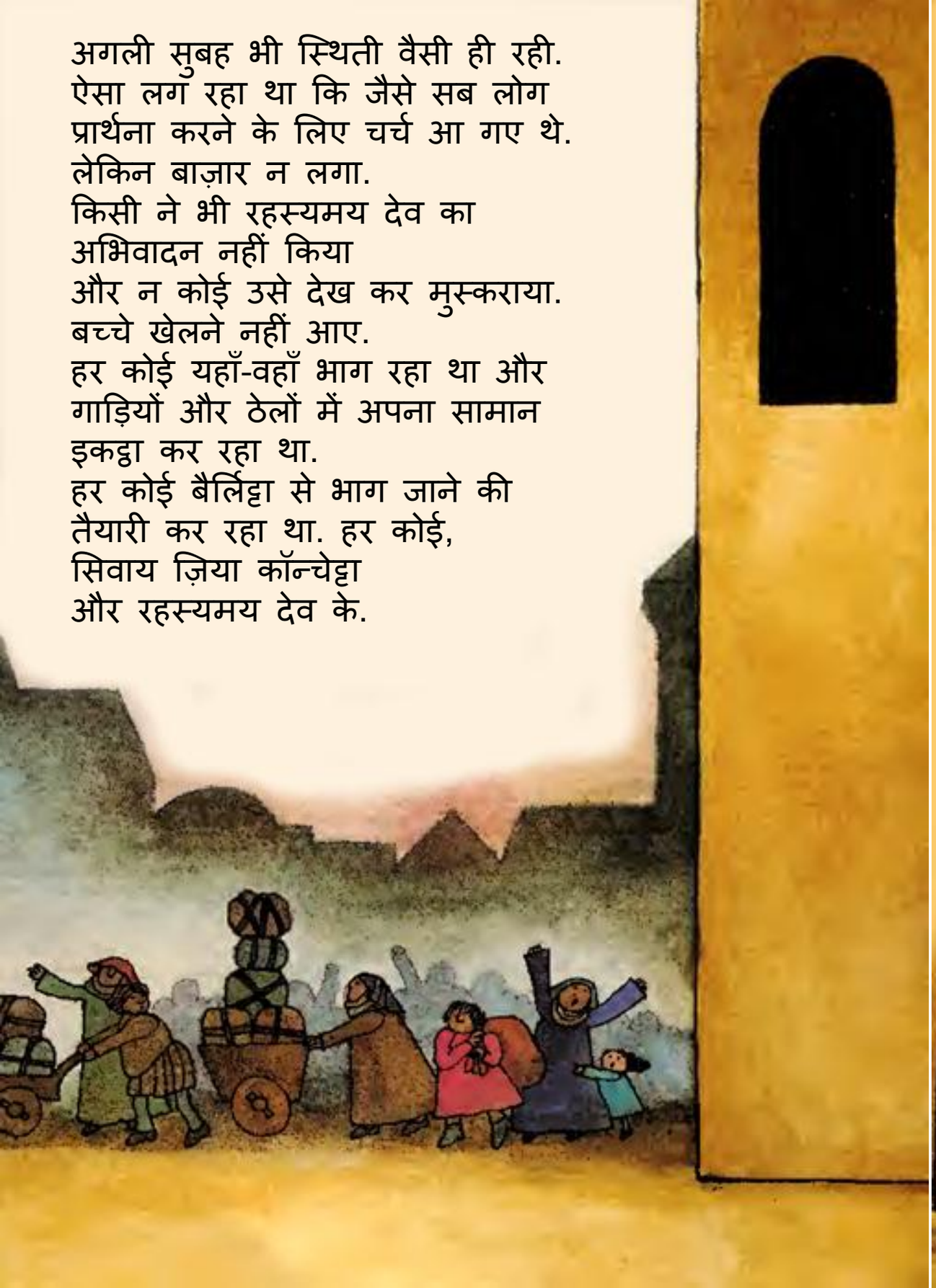

“देव,” उसने विशालकाय बुत से कहा,
“जब से मुझे याद है तुम यहाँ खड़े होकर
इस नगर और यहाँ के लोगों की
देखभाल करते रहे हो.
बैर्लिट्टा तुम्हें प्यार करता है
और मैं जानती हूँ कि
तुम भी बैर्लिट्टा से प्यार करते हो.
मेरी कामना है कि इस सेना से
हमें बचाने के लिए तुम कुछ कर पाते.
मुझे विश्वास है कि अपने आकार से
तुम उन्हें डरा कर भगा सकते हो.
तुम अपने स्थान से कूद कर नीचे
क्यों नहीं आ जाते?”

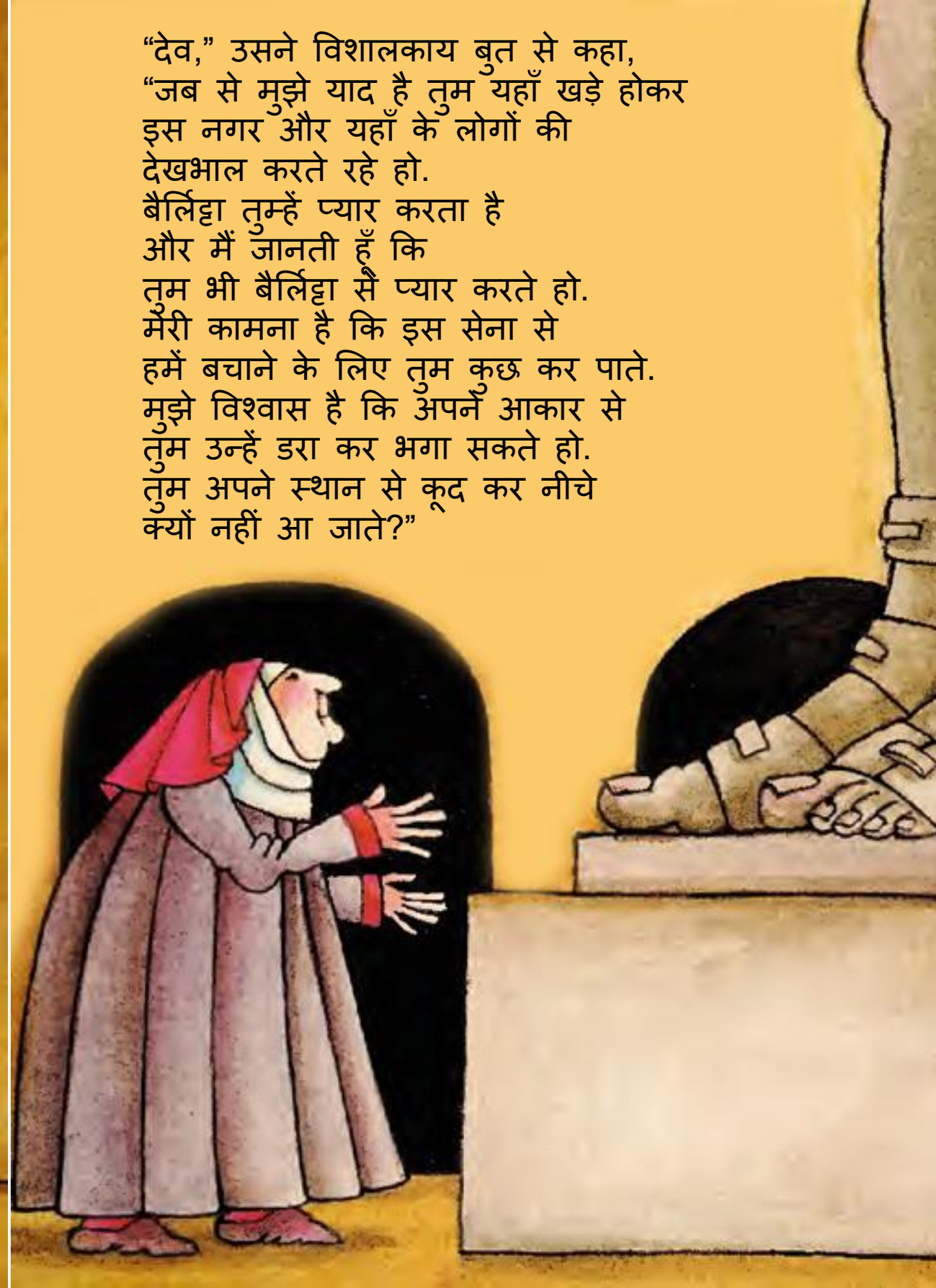

और रहस्यमय देव ने ठीक वही किया!
“अब.....” ज़िया कॉन्चेट्टा ने कहा.
फिर उन दोनों ने मिल कर समस्या पर
विचार किया और उन्हें एक युक्ति सुझाई दी.
“यह बहुत ही उत्तम युक्ति है,” ज़िया कॉन्चेट्टा ने कहा.

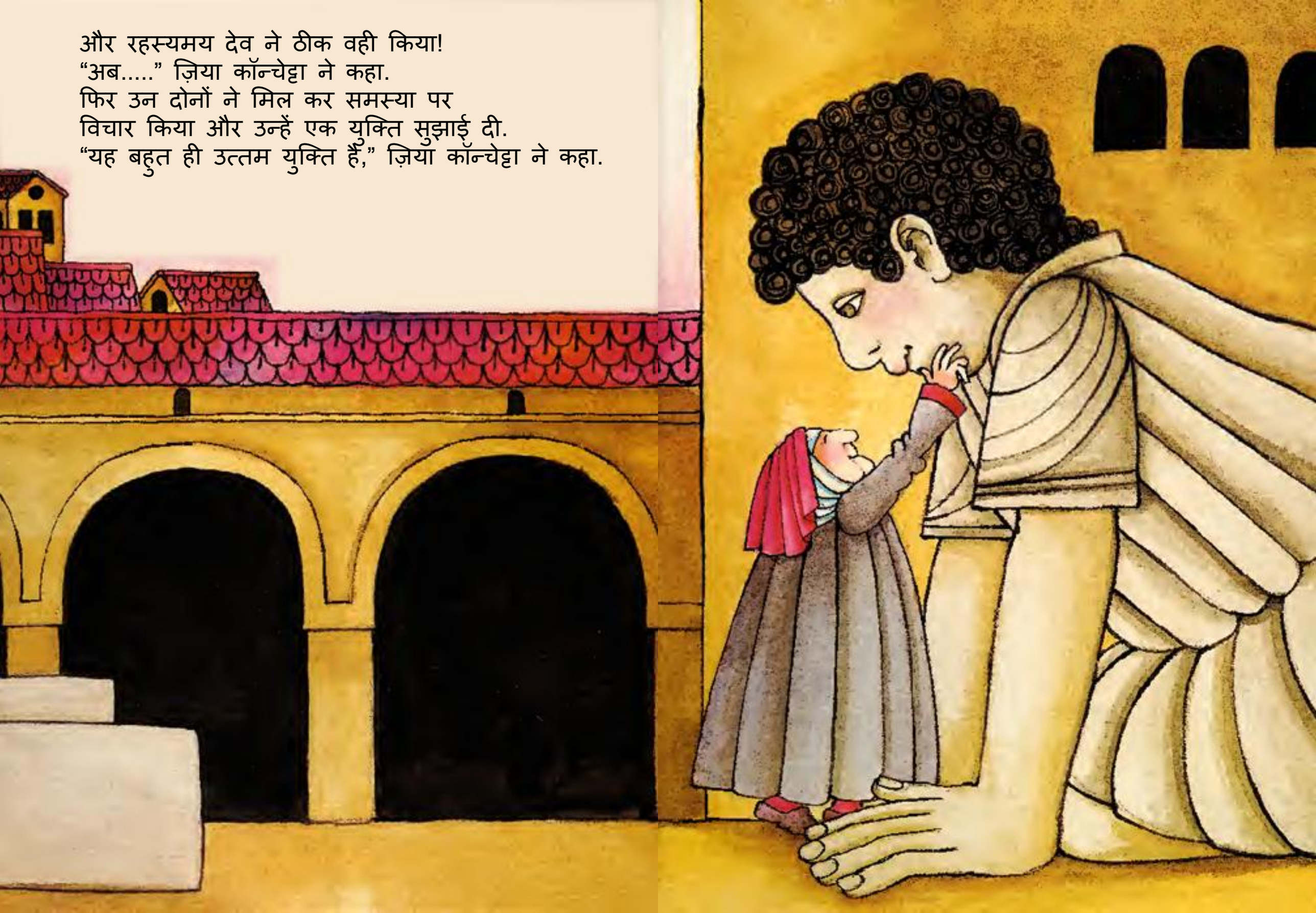

रहस्यमय देव वापस अपने स्थान पर
जाकर स्थिर खड़ा हो गया.
“बैर्लिट्टा के निवासियों,” ज़िया कॉन्चेट्टा ने पुकार
कर कहा. “तुरंत यहाँ आओ!
बड़ा अच्छा समाचार है.....
चमत्कार हो गया.....
हमारा देव हमारी रक्षा करेगा. आओ!”
बैर्लिट्टा के लोग उसके आसपास इकट्ठे हो गए.
“मित्रों,” ज़िया कॉन्चेट्टा ने कहा, “हमारा देव
शत्रु सेना का सामना करने जाएगा!
आप सब ने बस तीन काम करने हैं.
पहला, सब से बड़ा प्याज़ लाकर मुझे दो.
दूसरा, सब आँखों से ओझल हो जाओ.
बिस्तर के नीचे छिप जाओ, अलमारी में छिप
जाओ, तहखाने में छिप जाओ, अटारी में छिप
जाओ,
कहीं भी छिप जाओ, बस दिखाई मत दो.
और तीसरा, अभी कोई प्रश्न न पूछो!
अपने रहस्यमय देव पर विश्वास करो.”

एक नागरिक जल्दी से एक बड़ा प्याज़ ले आया.
“अब, छिप जाओ!” ज़िया कॉन्चेट्टा
ने चिल्ला कर कहा
और सब यहाँ-वहाँ दौड़ पड़े.
“तो, देव,” ज़िया कॉन्चेट्टा ने प्याज़ को
दो टुकड़ों में काटते हुए कहा,
“भाग्य तुम्हारा साथ थे!”
रहस्यमय देव ने दोनों हाथों में
प्याज़ के टुकड़े पकड़ लिए और
दुबारा अपने स्थान से नीचे आ गया
और शत्रु सेना का सामना करने चल पड़ा.

नगर से तीन मील दूर जाकर
रहस्यमय देव सड़क के किनारे बैठ गया.
प्याज़ के टुकड़े अपनी आँखों के पास ले आया.
उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदे
टपकने लगीं.
वह ज़ोर-ज़ोर से सिसकियाँ लेने लगा.

जब शत्रु सेना पहाड़ी के ऊपर से आई तो
कैसा दृश्य उन्हें दिखाई दिया.
“रूको,” कप्तान ने ऊँची आवाज़ में आदेश दिया.
सेना रूक गई.
“वह क्या है?” कप्तान ने अपने एक लेफ्टिनेंट से
फुसफुसा कर कहा.
“कोई विशालकाय लड़का लगता है-वह रो रहा है,”
लेफ्टिनेंट ने उत्तर दिया.
“चलो, देखते हैं कि क्या बात है,” कप्तान ने
उस ओर जाते हुए कहा, जहाँ रहस्यमय देव बैठा था.

“मैं कप्तान मिन्कियॉन हूँ,” कप्तान ने कहा.
“हम इस नगर का विनाश करने आए हैं.
तुम कौन हो और यहाँ बैठ कर क्यों रो रहे हो?
कोई चालाकी न करना-मेरे प्रश्न का उत्तर दो!”
“ओह, श्रीमान,” रहस्यमय देव ने सिसकियाँ लेते हुए
कहा. “मैं नगर के बाहर यहाँ बैठा हूँ क्योंकि
मेरे स्कूल के अन्य लड़के मुझे
अपने साथ खेलने नहीं देते.
वह कहते हैं कि मैं बहुत छोटा हूँ. वह मुझे छेड़ते हैं.
वह मुझे ‘बौना’ और ‘कमज़ोर’ बुला कर चिढ़ाते हैं.
खेलों के लिए मुझे सबसे अंत में चुना जाता है.
आज उन्होंने मुझे धमकाया कि
अगर मैंने स्कूल में आने का प्रयास किया तो
वह मेरी पिटाई करेंगे.
इतना छोटा होना मुझे बिलकुल पसंद नहीं है.”

देव ने तब बड़े ज़ोर से साँस छोड़ी
और सामने खड़े सैनिकों की टोपियाँ उड़
कर दूर जा गिरीं.
कप्तान और उसके सैनिक भौंचक्के हो गए.
अगर यह विशालकाय लड़का इतना छोटा था
कि अन्य लड़के इसे तंग करते थे तो
नगर में रहने वाले लोग कितने भीमकाय होंगे.
“लेकिन श्रीमान,” देव ने चिल्लाकर कहा,
“एक दिन मैं उन्हें दिखा दूँगा.
मैं अपना सारा खाना खाया करूँगा और
इतना बड़ा और ताकतवर हो जाऊँगा कि
उन सब का मैं सामना कर पाऊँगा.”

सैनिक पीछे खिसकने लगे, सब डर से काँप रहे थे.
सारे लेफ्टिनेंट कप्तान के पास इकट्ठे हो गये.
कप्तान भी विशालकाय लड़के से दूर हट गया था.
अब वह एक ही काम कर सकते थे.
कप्तान मिन्कियॉन और उसके अफसरों ने
अपनी तलवारें म्यानों से बाहर निकाल लीं.
उन्होंने तलवारों को हवा में लहराया
और चिल्लाये.....

“पीछे-मुड़ो! दुगनी गति से.....दौड़ो!”
सैनिक उलटे घूम गए और दौड़ने लगे
बैर्लिट्टा के विपरीत दिशा में.
रहस्यमय देव ने प्याज़ के टुकड़े फेंक दिये
और अपने आँसू पोंछ लिए
और वापस सैन सैपॉलक्रो चर्च की ओर चल दिया.

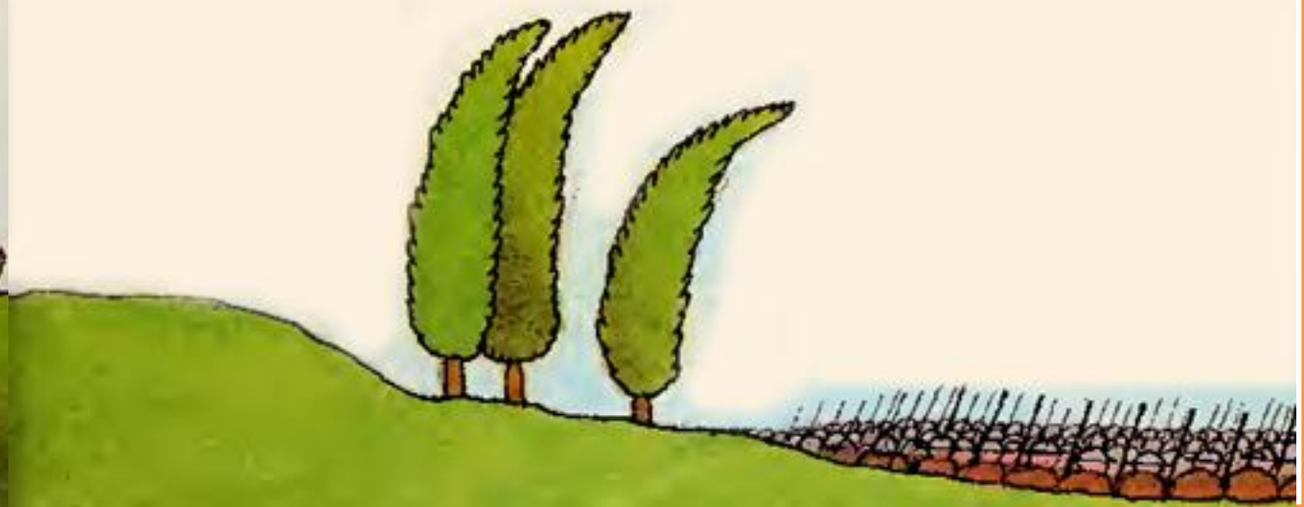

“वह भाग गए,”
जैसे ही देव अपने स्थान पर चढ़ कर
फिर से खड़ा हो गया तो ज़िया कॉन्चेट्टा ने
चिल्लाकर नगरवासियों को बताया.
“शत्रु सेना चली गई. अब तुम सब
बाहर आ सकते हो. हमारा नगर बच गया.
हमारे देव ने यह चमत्कार किया!”

उस रात नगर में कैसा
भव्य उत्सव मनाया गया!

लेकिन जब उत्सव समाप्त हुआ
और आकाश में चाँद बहुत ऊँपर आ चुका था,
रहस्यमय देव ने निद्रा में खोये नगर को देखा.
उसके सिर और कंधों पर बैठ कर
कबूतर गुटर्गूं करते-करते सो गए.
सब कुछ शांत था, सब कुछ निश्चल था.
ज़िया कॉन्चेट्टा ने अपने कमरे की खिड़की खोली.
“शुभ रात्रि, देव,” उसने कहा,
“और तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद.”

समाप्त